bihar 8th class sanskrit note | गुरु – शिष्य – संवादः

पाठ 10 – गुरु – शिष्य – संवादः

गुरु – शिष्य – संवादः
(संस्कृत का वाग्व्यवहार)
[प्रस्तुत पाठ में कक्षा .....स्तर पर किया जा सकता है ।
[अष्टमकक्षायाः दृश्यम् , आसनेषु .....उत्तिष्ठन्ति।
अर्थ – अष्टम वर्ग का दृश्य है अपने – अपने आसन (बेंच) पर लड़के और लड़कियाँ बैठी हैं । पृष्ठभूमि (सामने की दीवार) में श्यामपट्ट (ब्लैकबोर्ड) सामने में टेबुल , उनपर डस्टर और खल्ली है । शिक्षक का प्रवेश होता है । सभी छात्र उठ जाते हैं ।

छात्राः (समवेतस्वरेण) प्रणमामो वयं सर्वे ।

अर्थ -छात्रों – (एक स्वर में) हम सब आपको प्रणाम करते हैं ।

शिक्षक– (दक्षिणं हस्तमुत्थाप्य) तिष्ठन्तु सर्वे ।
अर्थ– (दाहिना हाथ उठाकर) सभी बैठ जाएँ ।

भावना – गुरुवर ! अद्य किं पाठयिष्यति ?

अर्थ -(गुरुवर ! आज क्या पढ़ाएँगे ?)

शिक्षकः -अद्य अनेकान्..... महत्वम् ।

अर्थ – आज अनेक विषयों को कहूँगा । सबसे पहले विद्या के महत्व को बताता हूँ ।

शीला — शोभनम् । विद्याविषये .....वर्तते ।

अर्थ – अच्छा है । विद्या विषय में सुनने को जिज्ञासा हमलोगों की भी है ।

शिक्षकः- तर्हि एवं प्राचीनं श्लोकं स्मरतु –

अर्थ– तो यह प्राचीन श्लोक को याद करें ।
न चौरहार्यं न च राजहार्यं , न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि ।

व्यय कृते वर्धत..... सर्वधन प्रधानम् ॥

अर्थ – विद्या चोर के चुराने योग्य नहीं है और न राजा के द्वारा हरने योग्य है , भाईयों के बीच बाँटने योग्य भी नहीं है और न यह भारी ही लगता है । खर्च करने पर सदैव बढ़ता है । इसीलिए तो कहा गया है विद्या धन सभी धनों में प्रधान है ।

मोईन : -अयं तु अतीव..... सुभाषितम् ।

https://www.evidyarthi.in/

अर्थ -यह तो बहुत प्रसिद्ध श्लोक है । धन की सीमा होती है । विद्या तो असीम (सीमा रहित) है । विद्या विषय पर कोई और भी सुभाषित है ?

शिक्षकः – बहूनि सन्ति । यथा..... अद्य वदिष्यामि ।

अर्थ – बहुतों हैं । जैसे – विद्या से अमृत (अमरता) की प्राप्ति होती है , विद्या से विहीन विनम्रता को देती है । विद्या से विहीन लोग पशु के समान होते हैं इत्यादि । अन्य भी आज बताऊँगा ।

पंकज – तत्रापि रोचकं.....वदतु भवान्।

अर्थ– वहीं पर कुछ रोचक बातें भी कहें । हम सभी किशोर हैं । हमारे जीवन के लक्ष्य को वदतु भवान् । आप बताएँ ।

शिक्षकः – यस्मिन् देशे समाजे च .....आश्चर्य नास्ति ।

अर्थ – जिस देश और समाज में हमलोग रहते हैं उसके प्रति सभी किशोरों (युवकों) का कर्तव्य है । इस अवस्था में स्वस्थ आचरण यदि हो तो सब जगह कल्याण , शान्ति और सुख का प्रसार होगा । कहीं भी विलगाव का भाव नहीं धारण करना चाहिए । जबकि शारीरिक और मानसिक परिवर्तन किशोर अवस्था में होता है । यह सब प्राकृतिक ही होता है । अत : इसमें आश्चर्य नहीं करना चाहिए ।

वसुन्धरा – गुरुवर ! किशोरान् .....कः उपदेशः?

अर्थ – गुरुवर ! किशोरों के प्रति आपका क्या उपदेश है ।

शिक्षकः – किशोराः अस्मिन् वयसि..... न करणीयम् । उक्तञ्च –

अर्थ – नवयुवक इस उम्र में उत्तेजित हो जाते हैं । सब जगह शीघ्रता करते हैं । यह उचित नहीं है । सभी कार्य समय से होता है । ईर्ष्या , द्वेष , लोभ , क्रोध , गाली – ग्लोज का प्रयोग करना और आलस्य ये सभी दोष हैं । अतः इन सबों का परित्याग करने से किशोर और किशोरी (लड़के – लड़कियाँ विद्या के पात्र होते हैं । अन्यथा सभी पढ़ाई व्यर्थ हो जाता है । जिस कार्य को करने से हमलोग उत्तेजित हो जाते हैं वह कार्य दूसरों के प्रति नहीं करना चाहिए । कहा गया है –

पालनीयं तु सर्वत्र .....हितं भवेत् ।

अर्थ – नवयुवकों को अनुशासन का पालन सब जगह करना चाहिए । शोध और लोभ नहीं करने से उनका (छात्रों का) हित होता है ।

त्याज्यं च मादकं..... गुरुनपि ।

अर्थ — मादक पदार्थों को त्याग करना चाहिए । बुरी संगति का त्याग करना चाहिए । माता – पिता को प्रतिदिन प्रणाम करना चाहिए और गुरु का आदर करना चाहिए ।

समाजस्योपकाराय .....सर्वकालिकम् ।।

https://www.evidyarthi.in/

अर्थ – समाज के उपकार के लिए और देश के हित के लिए काम करना चाहिए । ऐसा करने से नवयुवकों का सदैव कल्याण रहेगा ।

छात्रा : -अतीव कल्याणकरं वस्तुं दर्शितं भवता ।

अर्थ – बहुत कल्याणप्रद बातों को बताया आपने ।

छात्रः – प्रमुदिताः .....निर्गच्छति ।

अर्थ – छात्र लोग खुश नजर आते हैं । शिक्षक वर्ग से निकलते हैं ।

शब्दार्थ –

आसनेषु = आसनों पर । पृष्ठभूमौ = पृष्ठभूमि में । कृष्णपट्ट = श्यामपट्ट (Blackboard) । समक्षम् = सामने । फलकम् = टेबुल । तस्योपरि = उसके ऊपर । मार्जनी = डस्टर । पट्टलेखी = चॉक । उत्तिष्ठन्ति = उठते हैं । समवेतस्वरेण = एक स्वर में । दक्षिणम् = दायाँ । हस्तमुत्थाप्य (हस्तम् + उत्थाप्य) = हाथ उठाकर । पाठयिष्यति = पढ़ाएँगे । कथयिष्यामि = कहूँगा । आदौ = आरम्भ (शुरू) में । शोभनम् = अच्छा । विद्याविषये = विद्या के विषय में । अस्माकमयि (अस्माकम् + अपि) = हमलोगों का भी । जिज्ञासा = जानने की इच्छा । तर्हि तो । स्मरतु = याद रखें । चौरहार्यम् = चोर द्वारा चुराने योग्य । राजहार्यम् = राजा द्वारा छीनने योग्य । भ्रातृभाज्यम् = भाई द्वारा बाँटने योग्य । भारकारि = भार या बोझ देने वाला । व्यये कृते खर्च करने पर । वर्धत एव = बढ़ता ही है । नित्यम् = हमेशा , सदा । विद्याधनम् = विद्यारूपी धन । सर्वधनप्रधानम् = सभी धनों में प्रधान । असीमा = असीमित । किञ्चित् = कुछ , कोई । विद्याविषयकम् = विद्या से सम्बन्धित । बहूनि = अनेक । विद्ययाऽमृतमश्नुते = विद्या से अमृत प्राप्त होता है । (विद्यया + अमृतम् + अश्नुते) । विद्याविहीनः = विद्या से रहित । अपरम् = दूसरा , अन्य । वदिष्यामि = बोलूँगा । रोचकम् = रोचक , मनोरञ्जक । अस्माकम् = हमलोगों का । वदतु = बोलो , बोलिए । भवान् = आप । यस्मिन् = जिसमें । निवसामः = रहते हैं । तम् प्रति = उसके प्रति । सर्वेषाम् = सबका । किशोराणाम्=किशोरों का । अस्याम् अवस्थायाम् = इस अवस्था में । प्रसरेत् = फैलना चाहिए । स्वपरिवारमेव = (स्वपरिवारम् + एव) = अपना परिवार ही । कुत्रापि (कुत्र + अपि) = कहीं । विषमताभावम् = भेदभावपूर्ण भाव । धारयेत् = धारण करना चाहिए । यदपि (यत् + अपि) = जो भी । किशोरावस्थायाम् = किशोरावस्था में । किशोरान् प्रति = किशोरों के प्रति । भवतः = आपका । अस्मिन् = इसमें । वयसि = आयु में । उद्विग्नाः = उत्तेजित । अपशब्दानाम् = गालियों का । परित्यागेन = छोड़ देने से । पात्राणि = योग्य । अपरान् प्रति = दूसरे के प्रति । करणीयम् = करना चाहिए । उक्तञ्च (उक्तम् + च) = और कहा गया है । पालनीयम् = पालन करना चाहिए । किशोरैः = किशोरों द्वारा । अनुशासनम् = अनुशासन । तेषामपि (तेषाम् + अपि) = उनका भी । हितम् = हित , कल्याण । भवेत् = होना चाहिए । त्याज्यम् = छोड़ने योग्य । मादकम् = नशीला । द्रव्यम् = पदार्थ । त्यजेत् = छोड़ देना चाहिए । कुसंगतिम् = बुरी संगत (साथ) को । पितरौ = माता – पिता को । प्रणमेत् = प्रणाम करना चाहिए । आद्रियेत = आदर करना चाहिए । गुरूनपि = गुरुओं को भी । समाजस्योपकाराय (समाजस्य + उपकाराय) = समाज के उपकार के लिए । कुर्याद् (कुर्यात्) = करना चाहिए । देशहिताय = देश के हित के लिए । एवं कृते = ऐसा करने पर । किशोराणाम् = किशोरों का । कल्याणम् = हित । सार्वकालिकम् = हमेशा , सदा । कल्याणकरम् = कल्याण करने वाला । दर्शितम् = दिखाया गया । भवता = आपके द्वारा । प्रमुदिताः = प्रसन्न , खुश । प्रतीयन्ते = प्रतीत होते हैं , लगते हैं । वर्गात् = कक्षा से , वर्ग से । निर्गच्छति = निकलता है ।

व्याकरणम्

https://www.evidyarthi.in/

सन्धि विच्छेदः

बालिकाश्च = बालिकाः + च (विसर्ग सन्धि) । तस्योपरि = तस्य + उपिर (गुण सन्धि) । हस्तमुत्थाप्य = हस्तम् + उत्थाप्य ।

किञ्चदस्ति = किञ्चित् + अस्ति (व्यञ्जन सन्धि) । विद्ययाऽमृतमश्नुते = विद्यया + अमृतम् + अश्नुते । अपरमपि = अपरम् + अपि ।

तत्रापि = तत्र + अपि (स्वर सन्धि) ।

किमपि = किम + अपि ।

कर्त्तव्यमस्ति = कर्त्तव्यम् + अस्ति । .

स्वपरिवारमेव = स्वपरिवारम् + एव ।

स्वपरिवारमेव = स्वपरिवारम् + एव ।

कुत्रापि = कुत्र + अपि (स्वर सन्धि) ।

यदपि = यत् + अपि (व्यञ्जन सन्धि) । किशोरावस्थायाम् = किशोर + अवस्थायाम् (स्वर सन्धि) । .

प्राकृतिकमेव = प्राकृतिकम् + एव ।

नास्ति = न + अस्ति (दीर्घ सन्धि) ।

उद्विग्नाः = उत् + विग्नाः (व्यञ्जन सन्धि) ।

इत्येते = इति + एते (स्वर सन्धि) ।

किशोर्यश्च = किशोर्यः + च (विसर्ग सन्धि) । किशोरैरनुशासनम् = किशोरैः + अनुशासनम् (विसर्ग सन्धि) ।

तेषामपि = तेषाम् + अपि ।

त्यजेदपि = त्यजेत् + अपि (व्यञ्जन सन्धि) । गुरूनपि = गुरून् + अपि ।

समाजस्योपकाराय = समाजस्य + उपकाराय (गुण सन्धि) ।

निर्गच्छति = निः + गच्छति (विसर्ग सन्धि) ।

प्रकृति – प्रत्यय – विभाग :

दृश्यम् =√ दृश + यत् नपुंसकलिङ्ग , एकवचन

स्थिताः=√स्था + क्त स्त्री . व पुं . बहुवचन

उत्तिष्ठन्ति=उत् +√ स्था लट् लकार , प्रथम पुरुष , बहुवचन

प्रणमामः=प्र + √नम् लट् लकार , उत्तम पुरुष , बहुवचन

उत्थाप्य=उत् + √स्था + ल्यप्

तिष्ठन्तु =√स्था लोट् लकार , प्रथम पुरुष , बहुवचन

पाठयिष्यति =√पठ् णिच् (य) लृट् लका , प्रथम पुरुष , एकवचन

कथयिष्यामि = कथ् लृट् लकार , उत्तम पुरुष , एकवचन

स्मरतु =√स्मृ लोट् लकार , प्रथम पुरुष , एकवचन

हार्यम् = √हृ + ण्यत् , नपुंसकलिङ्ग , एकवचन

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in/